स्नातक–हिन्दी (प्रतिष्ठा) – द्वितीय खण्ड

चतुर्थ पत्र – छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

समकालीन हिन्दी – नागार्जुन

– डॉ॰ मुन्ना साह

हिन्दी साहित्य में नागार्जुन प्रगतिशील काव्यधारा के आधार कवि माने जाते हैं। उनका वास्तविक नाम बैद्यनाथ मिश्र था। वे पहले मैथिली भाषा में 'यात्री' के नाम से काव्य रचना करते थे, किन्तु बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अपना नाम 'नागार्जुन' रख लिया और इसी नाम से काव्य रचना करने लगे। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं –

काव्य संग्रह – युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था।

उपन्यास – रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन।

कहानी संग्रह – आसमान में चंदा तैरे।

उनकी रचनाओं में शोषण के विरुद्ध आवाज एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति की व्यापकता है। पीड़ित मानवता को स्वर प्रदान कर नागार्जुन ने अपनी कविताओं द्वारा प्रगतिवादी विचारधारा का पोषण किया। नागार्जुन पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति निरन्तर आक्रोश व्यक्त करते रहे हैं। उनकी कविताओं में आजादी के पश्चात् भारत की तत्कालीन स्थिति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है –

"देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से।

मिले न रोटी रोजी भटके दर–दर बने भिखारी से।।"

नागार्जुन यह देख रहे थे कि शोषित वर्ग अभावों में जीवन–यापन कर रहा है। कृषक अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं, श्रमिक भरपेट भोजन जुटाने में असमर्थ हैं, किन्तु उच्च वर्ग भोग विलास के व्यसन में धन नष्ट कर रहा है। वे लिखते हैं –

"जमींदार हैं, साहूकार हैं बनिया हैं, व्यापारी हैं।

अंदर – अंदर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं।।"

राजनीतिक परिस्थितियाँ भी देखने योग्य थी, सभी अपने स्वार्थ जनित कार्य करते एवं व्यापारियों से साठ–गांठ कर अपनी संपत्ति बनाने में लगे थे। इस संदर्भ में नागार्जुन लिखते हैं कि –

"खादी ने मलमल से अपनी साठ–गांठ कर डाली है।

बिड़ला टाटा डालमिया की तीसों दिन दीवाली है।।"

नागार्जुन की संवेदना उनकी तादात्म भाव से प्रकट होती है। वे एक स्थान पर लिखते हैं – "मैंने उन सबके साथ दुख भोगा जिन्हें दुख भोगते देखा।" उनकी एक कविता – 'प्रतिबद्ध हूँ' में उनका भाव प्रकृति से जुड़ा हुआ स्पष्ट होता है –

"संबद्ध हूँ, जी सबद्ध हूँ

सचर – अचर सृष्टि से

शीत से, ताप से, धूप से हिमपात से... "

कवि जीवन के अनेक पक्षों से प्रभावित होते हैं और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

प्राकृतिक संसार कवि की कविताई में स्पष्ट दिखाई देता है। युगधारा में एक कविता है –

"रजनीगंधा

तुम खिलो रात की रानी

हो म्लान भले यह जीवन और जवानी

तुम खिलो रात की रानी।"

रजनीगंधा की सूगंध बंदी जीवन का प्रतिवाद तथा विकल्प सा है। यह केवल प्रकृति–प्रेम की कविता नहीं है, उसमें व्यवस्था के प्रति घृणा भी है। नागार्जुन की अत्यंत प्रसिद्ध कविता है 'अकाल और उसके बाद', उसमें लिखते हैं कि –

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त"

इस कविता में नागार्जुन की संवेदना केवल मनुष्य के लिये ही नहीं है वरन् मनुष्य के साथ रहने वाले चूहे, छिपकलियाँ और कुत्तिया के लिए भी है। इन पशुओं की विकलता ही कवि की संवेदना को जाग्रत करती है। उनकी नेवला कविता में भी पशुओं के प्रति संवेदना को देख सकते हैं –

"जम्बू जमूरा, मातिया, दुजरुआ...

जाने कितने नाम मिल गए हैं इसे !

– हम सारे ही बंदियों का

बड़ा ही लड़ला खिलौना है यह तरुण नेवला..."

इतना ही नहीं नागार्जुन को अपनी भूमि, खेत–खलिहानों से भी प्रेम है –

"खेत हमारे भूमि हमारी सारा देश हमारा है।

इसीलिए तो हमको इसका चप्पा–चप्पा प्यारा है।"

वस्तुतः कवि ने मजदूर, किसान, पशु, प्रकृति, व्यापरी, नेता आदि सबका चित्रण अपने काव्य में किया है। पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की अभिव्यक्ति है तथा शोषक वर्ग के विलास पर व्यंग्य भी है।

————————————————•••————————————————